यूको बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)

UCO BANK
(A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का

Honours Your Trust

यूको अवध संदेश- 2020-21 कोरोना काल संवाद

लखनऊ अंचल की छमाहीपत्रिका

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल |

कवर पृष्ठ –सुश्री ईना शर्मा व.प्रबंधक के सौजन्य से ऐतिहासिक स्थल:

कवर पृष्ठ के बारे में :

इस भव्य भवन की नींव 15 दिसंबर 1922 में तत्कालीन गर्वनर हरकोर्ट बटलर द्वारा रखी गयी थी। 1922 में लखनऊ को इलाहाबाद की जगह राजधानी का दर्जा दिया गया1 इस पूरी इमारत को बनने में 21 लाख रूपए की लागत आई थी।

21 फरवरी 1928 को इस भवन का उद्घाटन हुआ। इस भवन का निर्माण कलकत्ता की कंपनी मेसर्स मार्टिन एंड कंपनी द्वारा किया गया। इसके मुख्य आर्कीटेक्ट सर सैमुअल जैकब तथा श्री हीरालाल जी थे।

आजादी के बाद उत्तर प्रदेश में पहली विधानसभा 20 मई 1952 में गठित हुई थी। इसके बाद से अब तक 17 बार विधानसभा का गठन हो चुका है। पहले यह भवन काउंसिल हाउस के नाम से जाना जाता था लेकिन 1937 में इसका नाम तब्दील करके विधानसभा रखा गया।

संरक्षक

श्री ओ.पी.वर्मा

अंचल प्रमुख

परामर्शदाता

श्री डी.एस.कौटियाल

उप अंचल प्रमुख

श्री रणधीर कुमार

मुख्य प्रबंधक

संपादक

संपादक एवं संयोजन

डॉ. रजनी गुप्त

मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल :

श्री यतिन जोशी, वरिष्ठ प्रबंधक

श्रीमती ईना शर्मा, वरिष्ठ प्रबंधक

विशेष सहयोग- तरूण कुमार सिंह, प्रबंधक(विपणन)

संपादकीय पता (सुझाव/परामर्श/रचनाएँ/आमंत्रण)

यूको बैंक अंचल,कार्यालय ,विनीत खंड, गोमतीनगर लखनऊ- 226010 ईमेल-पता – zolucknow.ol@ucobank.co.in

विषय सूची

- आवरण एवं बैकग्राउंड कवर गाथा
- अंचल प्रमुख का संदेश
- संपादकीय
- सृजन संसार
- शाखाओं की गतिविधियाँ
- लघु कथा
- अंचल कार्यालय की गतिविधियाँ
- राजभाषा क्षेत्र की गतिविधियाँ
- अंचल एक नज़र में

अंचल प्रमुख की कलम से:

प्रिय यूकोजन,

यह मेरे लिए अत्यधिक खुशी की बात है कि लखनऊ अंचल कार्यालय द्वारा हिंदी पत्रिका ' यूको अवध'का नियमित प्रकाशन किया जा रहा है । इस पत्रिका का नया अंक ' कोरोना: समय से संवाद" विशेषांक एक नये कलेवर में आपके समक्ष है।

वर्तमान में समस्त विश्व " कोरोना " महामारी के उपचार हेतु प्रयासरत है। जीवन को बचाना समस्त विश्व की प्राथमिकता है। भारत सरकार एवं आयुष मंत्रालय द्वारा समय समय पर कोरोना से बचाव हेतु दिए गए सुझावों जैसे- सोशल डिस्टेंसिंग,मास्क का उपयोग, व्यक्तिगत साफ-सफाई , आरोग्य सेतु एप का प्राथमिकता से अनुपालनकर हम इस आपदा से सुरक्षित रह सकते हैं ।

लॉकडाउन 0.4 के उपरांत हमें जो आवागमन की छूट मिली है जिसके चलतेहमें अत्यधिक सावधानी बरतने की आवश्यकता है। हमें लगातार वैकल्पिक वितरण चैनलों (आल्टरनेटिव डिलीवरी चैनल) जैसे- एम बैंकिंग प्लस डेबिट कार्ड, ई बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग, यूपीआई जैसी आधुनिक तकनीक का प्रयोग अधिकाधिक सुनिश्चित करना है ताकि हम ग्राहकों से भौतिक दूरी बनाए रखें और डिजिटल बैंकिंग हर समय की बैंकिंग बन जाए।'वर्क फ्रॉम होम' के पश्चात हमें 'बैंक फ्रॉम होम' ही हमारा लक्ष्य हो ताकि हर व्यक्ति सुरक्षित रहे। इस तरह हम प्रभावी ढंग से कोरोनावायरस जैसी बीमारी से बच पाएंगे। इस बार हमारे अंचल की टीम के सामूहिक प्रयासों से कई अंचलों की तुलना में ठोस सफलताएं अर्जित की हैं जिसके लिए आप सभी बधाई के पात्र हैं । भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा कोविड- 19 के तहत जारी किए दिशानिर्देशों के अनुसार हमारे अंचल ने सराहनीय कार्य किया है, मेरी ओर से सभी को बधाई । आशा है कि हमारा अंचल निरंतर आगे बढ़ता रहेगा। यूको बैंक के चहुंमुखी विकास के लिए सबसे जरूरी पहलू है - वसूली । इन विपरीत परिस्थितियों में एनपीए रिकवरी करना एक चुनौती है लेकिन इसके लिए जरूरी है कि निरंतर प्रोत्साहन एवं प्रेरणा के जरिए हम ग्राहकों से फोन पर संवाद करते रहें एवं अनुवर्ती कार्रवाई करते रहना ही हमारा लक्ष्य हैं। इसी क्रम में कृषि ऋण व अग्रिम से संबंधित योजनाओं को समयबद्ध रूप से आगे बढ़ाना होगा ।

डिजिटल बैंकिंग इस समय की अनिवार्यता है जिसे *अपटूडेट* रखना आज की जरूरत। इसे सुदूर देहात के आम जन तक पहुंचाना हमारी जिम्मेदारी भी है ताकि हर ग्राहक तक तुरंत बैंकिंग सेवाएं पहुंचायी जा सकें । इसके अलावा रिटेल, एमएसएमई, पीएमकिसान योजना एवं वसूलीपर विशेष रूप से फोकस करना होगा। मुझे विश्वास है कि आप सभी साथी उपरोक्त अपेक्षाओं को पूरा करने की दिशा में निरंतर प्रयासरत रहेंगे। बैंकिंग कारोबार में समृद्धि के नित नए क्षितिज खोलिए ! अपना और अपने परिवार का ध्यान रखिए।

शुभकामनाओं के साथ,(बैंक फ्रॉम होम)

आपका

ओ.पी.वर्मा

संपादकीय

लखनऊअंचल की यूको अवध मासिकीपत्रिका का प्रकाशन संकल्प राजभाषा 2020 कार्ययोजना के अधीन किया जा रहा है जिसका प्रमुख उद्देश्य अंचल के अंतर्गत होने वाली गतिविधियों को रेखांकित करना है। अंचल के सभी सदस्यों को एक सिरे से जोड़ने में कार्य करती है | इस माध्यम से अंचल की शाखाओं की उपलब्धियाँ, गतिविधियाँ तथा उनके रचनात्मक पहलूओं का विश्लेषण होता है | नए वित्तीय वर्ष के शुरुआत के साथ ही एक प्रण ले, कि हम बैंक को सर्वश्रेष्ठ बनाने की अपनी इच्छा शक्ति को प्रबल रखेंगे तथा इस दिशा में अनवरत प्रयासरत रहेंगे । कार्यालय स्तर पर अपनी राजभाषा हिंदी का अधिकतम प्रयोग करना ही है |आज बदलते परिवेश तथा प्रतिस्पर्धी युग में यह आवश्यक हो गया है कि हम सभी अपनी भाषायी पहचान को धूमिल ना होने दे और इसके लिये यह अतिआवश्यक है कि हम सभी अपनी राजभाषा हिंदी में अधिकतम कार्य संपादित करें । राजभाषा हिंदी में ही अपनी सीट का सारा कार्य करें तथा ऐसा करके बैंक के अनेक स्तरों पर सम्मान प्राप्त करें|

शुभकामनाओं के साथ |

डॉ. रजनी गुप्त

मुख्य प्रबंधक
राजभाषा

वसूली - एक चुनौती :

रणधीर कुमार,
मुख्य प्रबंधक

प्रिय साथियो,

आज की इस वैश्विक महामारी कोविड-19 से हमारे जीवन के विभिन्न स्तरों पर महत्वपूर्ण बदलाव आया है। अब हमें जीने के तरीके, काम करने के तरीके, आने जाने के तरीके, उठने बैठने के तरीके जैसे असंख्य कार्यों में एक बदलाव को अपनाते हुए एक नई उम्मीद के साथ आगे अग्रसर होना पड़ेगा। ये मानते हुए कि अब हम लोगों को इसके साथ ही चलना है। मित्रो, आइए, अब हम कुछ जरूरी बात करते है।

आज के इस वैश्विक महामारी काल में हमारे बैंक की जो सबसे बड़ी चुनौती बन गई है, वह है- वसूली।

आज के इस दौर में हमारे बैंक के लिए वसूली करना एक महत्वपूर्ण और सबसे ज्यादा प्रासंगिक सवाल बन गया है। आप सभी इस तथ्य से अवगत होंगे कि कई राज्यों के जिलों के सरकारी प्रशासकों ने वसूली प्रक्रिया पर रोक लगा दी है। यहां तक कि हमें कई स्थानों पर मांग पत्र भेजने की अनुमति भी नही दी गयी है जिसका लाभ एनपीए ग्राहक भी उठा रहे हैं जिनके पास बैंक का कर्ज वापस करने हेतु पर्याप्त रकम है लेकिन वे वैश्विक महामारी समस्या बताते हुए बैंक का कर्ज लौटाना नही चाहते।

आज के इस कोरोना काल में हम लोगों को पुन: वसूली प्रक्रिया पर विचार करना है और वसूली प्रक्रिया हेतु नए तरीके अपनाने हैं। आइए, कुछ ऐसे ही नए तरीकों पर एक नजर डालते हैं -

- हमें सॉफ्ट वसूली प्रक्रिया अपनाना है।
- एनपीए ग्राहक को प्रेरित एवं प्रोत्साहित करना है।
- एनपीए ग्राहक से लगातार फोन करके/ वीडियो कॉल के माध्यम से बातचीत करनी है।
- एनपीए ग्राहकों को यह महसूस न होने पाए कि बैंक ने वसूली करना बंद कर दिया है। साथ में हमें भी यह अहसास रहे कि वसूली कार्य को निरंतर करना है।
- लगातार एनपीए ग्राहकों को उनकी देनदारी के प्रति सजग करते रहने की जरूरत है।
- वसूली के प्रति हमें अपनी टीम को हमेशा सजग सचेत करते रहना है। साथ में हमारे अनुषंगी आरए/ ईए/ बीसी को भी सजग करते रहना है।

- बैंक की विभिन्न योजनाएं जो वसूली के लिए बनाई गई हैं, जैसे ओटीएस, एनडीएनडी, संशोधित कंप्रोमाइज के अद्यतन नीति के अनुसर वसूली के संबंध में लगातार मार्केटिंग करते रहना है।
- एनपीए ग्राहक को ये समझाना जरूरी है एवं हमारा उन्हें यह समझाना आवश्यक कर्त्तव्य है कि बैंक का कर्ज वापस करना उनकी अनिवार्य जिम्मेदारी है।
- एनपीए ग्राहकों को उनके सिबिल रिपोर्ट के बारे में बताना है कि बैंक का कर्ज वापस न करना आपके सिबिल रिपोर्ट के लिए कितना नुक्सानदायक है जिसका प्रतिकूल प्रभाव आपके परिवार पर पड़ सकता है।
- लगातार एनपीए ग्राहकों को वसूली के लिए डिस्काउंट प्रस्ताव देना वसूली अभियान का महत्वपूर्ण हिस्सा है जिसका ग्राहकों पर तुरंत अच्छा असर पड़ता है।

  मित्रो, आपने देखा होगा जैसे कई बार डॉक्टर इलाज के दौरान मरीजों को दवा से ज्यादा सलाह देने का कार्य करते हैं, ठीक उसी तरह आज वसूली के लिए हमें परामर्श देने/ प्रेरणा देना एवं प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

  हम सब जानते हैं कि हम सभी लोग एक विषम परिस्थिति से गुजर रहे हैं जिसका नाम है- कोरोना काल जो कि बेहद चुनौतीपूर्ण समय है जिसने जीने के नए तरीके सिखाए हैं। हमें इस विपरीत समय में भी वसूली को नजरअंदाज नही करना है और लगातार वसूली के लिए हर द्वार खटखटाना है जहां से हम अपने बैंक द्वारा दिए गए ऋणों की वसूली सुनिश्चित कर सकें।

योद्धा

रजनी गुप्त

' आप कोरोनावायरस वाली बीमारी के बारे में एक अर्जेंट खबर देनी है। ' बेटी की हड़बड़ाहट वाली आवाज सुनकर नीरजा चौंकी।

' क्या हुआ ? तुम्हारी आवाज में इतनी नर्वसनैस क्यों ?'

' सुनो, अभी अभी स्वास्थ्य मंत्रालय से खबर आयी है कि एकाध दिन में सब कुछ लॉकडाउन होने वाला है। आप जल्दी से जल्दी 10 किलो आटा, दाल, चावल, आलू वगैरा मंगवाकर रख लो। अपने दफ्तर के लोगों को भी बता दो। यह बात अभी किसी को नही पता।' उस आवाज में बेचैनी ताड़ते हुए मैं पूछ बैठी- ' अचानक से यह सब ? यहां तो सब नॉर्मल नजर आ रहा है फिर कोई यकीन कैसे करेगा ?'

' ' तू भी हफ्ते भर की छुट्टी लेकर आ जा। वहां ऐसे माहौल में अकेले कैसे क्या करेगी, सोचकर जी घबड़ाने लगा। '

' नो, एपिडेमिक एक्ट के चलते कोई भी डॉक्टर छुट्टी एप्लाई नही कर सकता। ऐसे में आवाजाही एकदम से बंद । ' बेटी की बौखलाई आवाज सुनकर दिल बैठने लगा। हे प्रभु, उसे इतनी शक्ति देना कि वह न घबराए, यही सब सोचकर बेचैनी होने लगी।

उसी रात प्रधानमंत्री द्वारा एक दिन लॉकडाउन की घोषणा हुई मगर अगले ही दिन से देश भर में सचमुच लॉकडाउन हो गया जिससे जीवन दिनोंदिन अनिश्चितता और असुरक्षा से घिरता चला गया। बेटी की सुरक्षा के प्रति मां की दुश्चिंता दिन ब दिन बढ़ती गई कि एक दिन उसने फोन मिलाया। उसने छूटते ही कहा- ' लिसन, कोरोनावार्ड में मेरी ड्युटी लग गई। हम सब डॉक्टर्स खुद बहुत परेशान हैं मगर क्या करें ? अभी तक कुछ अस्पतालों में हमारी सुरक्षा किट (पीपीई किट) आई नही हैं मगर क्या करें ? फिर भी ड्युटी तो करनी है न ?'

' बिना पीपीई के तुम ड्युटी कैसे करोगी ? मना क्यों नही कर देती ?' नीरजा ने तर्क दिया तो वह भड़क पड़ी -

' अरे ममा, कैसी बातें करती हो ? हम डॉक्टरों को हर बार यही सबक रटाया जाता कि तुम लोग तो युद्धभूमि में लड़ने वाले सैनिक हो जो कभी पीठ नही दिखा सकते। आप समझ रहीं हैं न ? '

' हूं. . अवाक रह गई जैसे शब्द कहीं खो गए हों।

' आप चिंता मत करना। अब जो भी जैसी भी मास्क ग्लब्स वगैरह हैं, उसे पहनकर 7 घंटे की ड्युटी करनी है। वहां मोबाइल नही ले जा सकते तो आप फोन मत करना। पानी भी नही पी सकते। कुछ नही कर सकते। मौका मिलते ही मैं खुद कॉल करूंगी। ' किसी समझदार की तरह बोलती रही वह।

' तू तो बचपन से ही बोल्ड है सो डरना नही। गॉड ब्लैस यू बेटा। ' न चाहते हुए भी आवाज भर्राने लगी थी मगर इससे बेफिक्र वह उल्टा समझाने लगी- ' आपको घर से बाहर कतई नही निकलना। आपकी उम्र ज्यादा है, उतनी इम्यूनिटी होगी नही। दफ्तर से छुट्टी ले लो। समय मिलते ही कॉल करूंगी, ओके ।'

' अपना खयाल रखना . . कहना चाहा मगर तब तक फोन कट चुका था।

इधर टीवी पर रोजाना कोरानावायरस से होने वाली मौतों और संक्रमित लोगों का आंकड़ा दिखाया जाता, उधर नीरजा का दिल धड़कने लगता। हे भगवान, सब ठीक कर देना। ' मन की मन दर्जनों बार प्रार्थना करतीपर राहत की कोई खबर दूर दूर तक नही सुनाई दी। उल्टी दिशा से चलती गर्म हवाओं से आती तपती खबरें तन मन को संतप्त करती और सोच सोचकर घबराहट बढ़ने लगती।

उसने कई बार बेटी को फोन मिलाने की कोशिश की मगर पिछले तीन दिनों से फोन नही मिला। हर दिन गिनती और तलवार पर चलकर जीने जैसा अहसास होता। आज रात सोने जा रही थी कि बेटी का फोन बजता दिखा। उसने लपककर फोन उठाया- ' बेटा, तूने फोन नही किया ? कैसी हो ? सब ठीक तो है न ? कोई परेशानी की बात तो नही ?'

' हां, सब ठीक है। हमारे वार्ड में चार मरीज है जिनमें से दो स्टेबल हैं मगर एक की हालत खराब है। वह लगातार खांस रहा है मगर इस वार्ड में कोई एक्जॉस्ट फैन तक नही। ऊपर से हमारी कायदे से ट्रेनिंग तक तो हुई नही। क्या करें ? हमारे देश में डॉक्टरों की संख्या बहुत कम हैं तो सबकी ड्युटी लगानी पड़ी। पता है, इस देश में जीडीपी में स्वास्थ्य पर महज 1.5 प्रतिशत ही खर्च किया जाता है, लगभग 800 मरीजों पर एक डॉक्टर। '

' बेटा, अपना खयाल रखना हर पल। बस, कुछ दिनों की बात है, फिर उसके बाद क्वारेंटाइन करेंगे न तुझे ?'

' हां, उसके बाद सैम्पल देंगे फिर एक सप्ताह बाद फिर से ड्युटी। '

' पर अखबारों में तो 15 दिन का क्वारेंटाइन की खबरें दे रहे हैं।' अभी मेरी बात खत्म ही नही हुई कि फोन कट गया । बेटी की सलामती के फिक्रमंद मां अखबार पढ़ती तो आसपास का परिदृश्य इतना भयावह लगता जैसे अनवरत चलते विशाल समय के पहिए को किसी अनजान शक्ति ने जाम कर दिया हो या वेग से चलती सृष्टि की मशीन का स्विच अचानक से बंद कर दिया गया हो और पल भर में समूचे ब्रह्मांड का कारोबार औंधे मुंह धड़ाम। अखंड भूभाग में हम सब रेंगती हुई चीटियां भर ही तो हैं जिसे अलक्षित वायरस जैसी महान शक्ति ने अपने रौद्र रूप में रोंद डालने की साजिश रची हो कि चलती फिरती दुनिया पल भर में जहां की तहां ऐसे थम गयी जैसे किसी ने उसे श्राप दे डाला हो।

मौत की एक आहट से किस कदर ब्रह्मांड भयाक्रांत हो उठा कि एक से बढ़कर एक विकसित देश तक घुटने टेके परस्त-परास्त नजर आने लगे। शक्तिशाली देश अमेरिका, इटली, कनाडा, इंग्लैंड, स्पेन या अरब देश जो समृद्धि के शिखर पर चढ़कर दंभ और गुरूर से इठलाते और चमचमाते थे ,वे आज कितने असहाय और लाचार नजर आ रहे हैं जिनके बैभव और कामयाबी का परचम फहराते उनके भव्याकार महल, अट्टालिकाएं, फार्महाउस, दुकानें, दफ्तर वगैरह में आज वैसी आन बान शान नजर नही आ रही थी, न उनके शीशे जगमगा रहे थे, न वहां उनकी कीर्ति पताकाएं लहरा रहीं थीं, बल्कि वहां एक भी आदमी नजर ही नही आ रहा था जैसे कुदरत इनकी सफलता पर अट्टहास कर रही हो।

दंभ और अहंकार से चूर अपनी अकड़ में तने राजनेताओं का बड़बोलापन देखने लायक था। प्रकृति ने ऐसा पलटवार किया कि एक से बढ़कर एक महाशक्तियां भयातुर और निर्बल मुद्रा में कुदरत के सामने नतमस्तक नजर आ रही हैं। कहां गुम हो गया उच्चतम पोजीशन, पैसा, पजेशन या सर्वोच्च सत्ता का नशा ? आज तो सब असहाय और डरे हुए अपने ही सुरक्षाचक्र को मजबूत करने में जुटे हुए हैं। कुदरत के कुचक्र के आगे चींटीनुमा प्राणी कुचलकर कभी भी किनारे लगा दिया जाएगा। पूर्वानुमान से परे हैं यह सब। किसी के भी नियंत्रण से परे । सब कुछ देख सुनकर असहाय मूकदर्शक बने हम मृत्यु की शाश्वतता के खिलाफ छेड़ी गई इंसानी जंग जैसे खिलौने से खेलती जंग लग रही है जिसे देखने के लिए अभिशप्त हैं हम सब ।

हे प्रभु, मेरी बेटी को शक्ति देना। उसे हौसला देना कि वो अपनी ड्युटी पर तैनात सिपाही की तरह अविचल बनी रहे। '. मन ही मन अनायास महामृत्युंजय मंत्र का जाप दुहराते हुए नीरजा ने हाथ जोड़कर बेटी की सलामती की प्रार्थना कीं।. प्रकृति की यह प्रक्रिया इतनी गूढ़ और रहस्यमयी पहेली है जिसे कोई भी नही समझ सकता। कुदरत का यह कहर और इसका कारोबार आज सबसे ताकतवर रूप में चुनौती दे रहा है जिसकी संरचना या कार्यव्यापार को समझना इंसानी बूते के बाहर। ऐसे असंख्य विचार उसे चैन से जीने नही देते । ऐसे भारी दिन गुजरे थे ये तीन दिन जैसे तीन साल हों। फोन मिलाने पर अक्सर उसका फोन उठता नही मगर उस दिन पलटकर फोन आया- ' विजी हूं अभी। खाली होते ही करूंगी। सब ठीक है।' आवाज सुनकर ही जैसे उसे तसल्ली हो गयी थी।'

एक बार फिर वह प्रकृति की जटिल गुत्थी को विचारों से सुलझाने लगी। सालों से हम प्रकृति के सामने घुटने टेकते आ रहे हैं, फिर चाहे वे पेड़ पौधे या वनस्पतियां हों, नदी समंदर हो, आसमान के चांद तारे व सूरज हों मगर कोई तो महाशक्ति हैं जो हम सबको सदियों से नियंत्रित करती आ रही है। मनुष्य तिकड़मी चालों से हासिल सत्ता पाकर मद में बौराया घूमता है जब कि ये सब बेकार चीजें । नीरजा की मां ने उसे कन्विंस करना चाहा- ' ज्यादा सोचो मत। ईश्वर पर भरोसा रखो और प्रार्थना करो। बस इतना ही तुम्हारे हाथ में है।'

सुबह ठीक 9 बजे फोन आया तो उसने उसे ऐसे उठाया जैसे सालों से बिछड़ी बेटी को गले लगाकर हिलक हिलककर रोने लगी हो। आज कितना कुछ कहना चाहती थी मगर वह सुनने के लिए अधीर हो उठी - ' सब ठीक से निबट गया। वापस आ गए रूम पर। कल टैस्ट होगा। होपफुली सब ठीक हो जाए। मम्मा, अब बहुत भूख लग रही है, कुछ चटपटा खाने का मन हो रहा है पर सब जगह सब बंद । आपके हाथों की बनी चावल की खीर खाने का मन हो रहा है, मम्मा, मिस यू। ' बच्ची के मीठे बोल सुनकर जैसे जान में जान आ गई।

' बेटी, तू ठीक है, तो दुनिया आबाद है मेरी। धन दौलत, पद प्रतिष्ठा या पावर वगैरा सब निरर्थक मगर इतना सब बोल नही पाई। वाचाल नीरजा के होंठ सिल गए जैसे शब्दों का अकाल पड़ गया हो।

' सुन, तू चावल और मिल्क पाउडर लेकर धीमी आंच पर रख दे। बाद में चीनी मिला लेना। तेरी पसंदीदा खीर बन जाएगी।'

' ओके, कोशिश करते हैं । '

महज 7 दिनों में जीवन इतना उलट पुलटकर सिकुड़ता सिमटता जाएगा, सब कुछ अविश्वसनीय, अप्रत्याशित और कल्पनाशक्ति से परे कि मौत की आशंका भर से नीरजा जैसी सैकड़ों मांओं के कलेजे थर्रा गए होंगे। उसकी रिपोर्ट निगेटिव ही आए, सोचकर उसे रात भर बेचैनी घेरे रही।

अस्पताल से लौटकर डॉक्टर नेहा अपनी जांच करवाने के बाद लौटने लगी कि तभी पता चला कि स्टेबल कंडीशन वाले मरीजों की रिपोर्ट निगेटिव आ गई और उन्हें छोड़े जाने की तैयारियां शुरू हो गई है, सोचकर राहत की सांस ली। चलो, मेरे क्वारंटाइन शुरू होने से पहले यह अच्छी खबर आ गई, सोचते हुए अस्पताल से वापस लौटने लगी। तभी मरीज के घर वाले अपने हाथों में फूल मालाएं लेकर डाक्टरों का स्वागत करने लगे।जब उन्होंने फूल तोड़कर बरसाने शुरू किए तो बहुत अजीब सा लगा, तभी एक छोटी सी लड़की ने अपने हाथ का गुलाब उसे देते हुए कहा- थैंक्यू डाक्टर दीदी, सुनकर अपने डाक्टर होने पर पहली बार गुमान हुआ। सचमुच, कितने लोग कितनी उम्मीदों से हमारी तरफ़ देखते हैं,रियली टचिंग! समय कठिन जरूर है मगर हम युद्ध के मैदान में डटे योद्धा आसानी से हिम्मत नहीं हारने वाले। चलो,कल से मेरा आफ शुरू, सोचते हुए मां को फोन मिलाने लगी।

अचानक फोन पर बेटी की उल्लास भरी आवाज सुनाई दी- ' लिसन ममा, मेरी आज रिपोर्ट आ गई, हां, हां, घबराने की कोई बात नहीं, निगेटिव रिपोर्ट है, खुश ? उसकी बेफिक्र आवाज सुनकर जैसे मेरी खोई चेतना लौट आई।

थैंक गॉड... कहते हुए अपने इष्टदेव को याद किया।

उसकी आत्मविश्वासी खनकती आवाज सुनकर नीरजा की आंखें गीली होने लगीं जैसे सुबह की मंद मंद महकती हवा संग चिड़ियों की चहक से मीठा मधुर रस टपकने लगा हो। मोबाइल से मुखरित ध्वनि तरंगों के जरिए पहुंच रही संवेदना की आंच महसूसते हुए तमाम अहसास कंठ तक आकर अवरूद्ध हो गए जबकि वह कहना चाहती थी- माई ब्रेव चाइल्ड, तू तो कमाल की योद्धा है, सचमुच!!' मगर शब्द थे कि गले में ही अटके रह गए।

अहंकार विसर्जन

– मनोहरलाल

ध्यान का एक मार्ग या यों कहें कि मोक्ष/ आत्मसाक्षात्कार का एक तरीका है- साक्षी भाव। साक्षी भाव को ही महात्मा बुद्ध ने सम्यक ध्यान की संज्ञा दी है। जो कुछ भी जीवन में या उसके आसपास घटित हो रहा है, बिना उस पर तर्क किए हुए कि वह अच्छा है, या बुरा, सही है या गलत, सजग भाव से उसे देखते रहें1 आप ध्यान को उपलब्ध हो जाएंगे। सजगता इतनी कि कोई भी कृत्य बेहोशी में नही होना चाहिए क्यों कि हमारे अधिकांश कार्य बेहोशी में होते हैं। हमारा दिमाग कहीं और चलायमान होता है और हम कर कुछ और रहे होते हैं। यदि आपमें पूर्ण सजगता में हैं तो चोरी/ झूठ बोलना तो छोड़ दीजिए, आप मूर्ति पूजा भी नही कर पाएंगे। आपको व्यर्थ मालूम पड़ेगा- मूर्ति खुद ही बनाकर उसकी पूजा करना कोई औचित्य नही मालूम पड़ेगा, इसलिए हर इंसान सजग होने से भय खाता है और कोई भी उसका कार्य समग्रता में तो होता ही नही। आधे अधूरे प्रयास, आधा अधूरा बंटा मन, फिर असफलता मिलने पर अफसोस कैसा ? अधूरे प्रयासों का परिणाम असफलता ही हो सकता है, अन्य कुछ भी नही।

अगर आप साक्षी है हर कृत्य के, तो पाएंगे कि कर्ता आप हैं ही नही ओर कमाल की बात ये है कि जिसके कर्ता आप नही है, उसका श्रेय भी आप ले लेते हैं। सांस आती है, आप लेते नही हैं और फिर आप कहते हैं कि मैं सांस ले रहा हूं। यदि आप साक्षी है तो आपका अहंकार टूटेगा। साक्षी रहने से अहंकार टूटेगा ही। वायु आपके वश में नहीं, जल आपके वश में नही, सूर्य, चंद्र कुछ भी तो आपके वश में नही और आपका अस्तित्व इन सबके होने से हैं। वृक्ष नही, वायु नही, जल नही तो आपका कोई स्वतंत्र अस्तित्व है ही नही, तो जीवन समाप्त और आप गर्व से फूले जा रहे हैं, जानते नही कि मैं कौन हूं ? साक्षी रहेंगे तो जान जाएंगे,अनंत ब्रह्मांड में आप कुछ भी नही, चींटी के बराबर भी नही। इस वर्ष कोरोना वायरस ने मनुष्य के अहंकार को तोड़ने का कार्य किया है, अदृश्य वायरस से दुनिया ठप्प, सब बंद।

अहंकार किसी का भरोसा नही करता, न मित्र का, न शत्रु का। जो आज मित्र है, कल शत्रु हो सकता है। मित्र, बस एक अप्रकट शत्रु है, है वो भी शत्रु ही, बस अवसर मिलने की देर है। इधर चोट लगी, उधर मित्रता समाप्त । अहंकार को जब तक संतुष्टि नही मिलती, जब तक कि प्रत्युत्तर न दे दे।

साक्षी भाव द्वंद्व रहित यहां जो हो रहा है, सब ठीक है, इसका सबसे अच्छा उहाहरण श्री कृष्ण है जो युद्ध के मैदान में भी खड़े होकर मुस्करा सकते हैं, युद्ध भी स्वीकार, संधि भी स्वीकार, रणछोड़ होना भी स्वीकार, रणभूमि भी स्वीकार। साक्षी का अर्थ कर्म से भागना नही है। कर्म के बिना तो मनुष्य जीवित ही नही रह सकता और ये पृथ्वी कर्मलोक है तथा मनुष्य योनि को कर्मयोनि कहा गया है। साक्षी भाव उत्पन्न होने से पहले अहंकार का गिरना आवश्यक है। अब यदि इस अहंकार गिराने का प्रयास करेंगे तो कभी न विसर्जित होगा।

अहंकार बहुत बड़े बड़े प्रसिद्ध नामों की समस्या है और शायद जितना बड़ा नाम, उतना बड़ा अहंकार1 एक बार जार्ज बर्नाड शा ने विंस्टन चर्चिल को अपना शो देखने के लिए आमंत्रित किया, इस आग्रह के साथ कि यदि आपका कोई मित्र हो तो साथ ले आएं।'

' यदि आपका कोई मित्र हो ?' यह बात चर्चिल को खटक गई यानी उसका कोई मित्र हो ही नही सकता, इसीलिए यह शब्द प्रयोग किया गया। यदि कोई हो ?' उस रात चर्चिल के अहंकार को चोट लगी। वे रात भर सो न सके। अहंकार जब तक प्रत्युत्तर नही देगा, तब तक चैन नही लेने देगा।

उसने सुबह जार्ज बर्नाड शॉ को पत्र लिखा- जिस तिथि को नाटक मंचन है, उस दिन वह व्यस्त है। उन्हें खुशी होगी इस नाटक का मंचन देखने की यदि भविष्य में दुबारा कोई शो हो तो ?'

उन्होंने भी जोर दिया' यदि कोई हो तो ?' तब जाकर अहंकार को संतुष्टि मिली। प्रत्युत्तर दे दिया गया यानी भविष्य में इस नाटक का दुबारा मंचन नही होगा। राजनैतिक/ सामाजिक अहंकार की दृष्टि से ये कितना भी सही हो किंतु अंर्तयात्रा के लिए इस प्रकार का दृष्टिकोण कहीं नहीं पहुंचाएगा। अंर्तयात्रा पर चलना है तो अहंकार छोड़ना ही पड़ेगा या फिर यह कहना उचित होगा कि अंर्तयात्रा पर अहंकार छूट ही जाएगा।

ध्यान में बैठें। उठते विचारों को साक्षी भाव से देखें, बिना तर्क किए। धीरे धीरे पाएंगे, मन शांत हुआ। अहंकार विसर्जित होने लगा और साक्षी भाव उत्पन्न हुआ। ये मंजिल नही है, सिर्फ अपनी आगामी यात्रा की जमीन तैयार की है आपने।

तो आप इस जमीन तैयार करने के लिए तैयार हैं न ?

वरिष्ठ प्रबंधक

अंचल कार्यालय, लखनऊ

कोविड- 19 कोरोना वाइरस - बचाव की कहानी हिंदी वर्णमाला की जुबानी

मनोज कुमार सिंह

वरिष्ठ प्रबंधक

वैश्विक महामारी के इस आपातकाल में हम सबको एहतियाती उपाय अपनाने हैं ताकि सोशल डिस्टेंसिंग के निर्धारित मानकों का शत प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित करते हुए हम आने वाली बीमारी से अपना, अपने परिवार का, अपने पास पड़ोस का एवं अपने मुहल्ले का खयाल रखें। हमारे ऐसा करने से ही हम न केवल अपने मुहल्ले बल्कि आसपास के परिवेश में एक सजग और जिम्मेदार नागरिक की हैसियत से अपनी सार्थक भूमिका का कुशलतापूर्वक निर्वहन कर पाएंगे।

कोविड- 19 के अंतर्गत प्रधान कार्यालय द्वारा समय समय पर जारी अनुदेशों के अनुपालनार्थ सोशल डिस्टेंसिंग बनाए रखने हेतु एहतियाती उपाय अपनाना तो हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है ही, मगर लॉकडाउन खुलने के उपरांत हमें जो छूट मिली है, उस समय हमें पहले से कहीं ज्यादा सावधानी बरतने की जरूरत है जिससे वैश्विक महामारी की इस विश्वव्यापी आपदा के अवसर पर हम अपने शहर, अपने प्रदेश एवं क्रमश: अपने देशवासियों को यथेष्ट जानकारी दे सकें।

इस अवसर पर अंचल कार्यालय के विधि विभाग के वरिष्ठ प्रबंधक श्री मनोज कुमार सिंह ने कुछ ऐसा ही फार्मूला तैयार किया है जो हिंदी वर्णमाला के सभी अक्षरों से बहुत रोचक ढंग से एवं बहुत कुशलतापूर्वक तैयार किया गया है जिसे पढ़कर आप सभी इस कोरोनावायरस जैसी बीमारी से बच पाएंगे।

आग्रह है कि आप इसे ध्यान से पढें एवं लाभान्वित हों।

कोविड- 19 कोरोना वाइरस - बचाव की कहानी हिंदी वर्णमाला की जुबानी

अ अपने स्वास्थ का ख्याल रखे	आ आरोग्य सेतु एप का प्रयोग करे	इ इधर उधर बिना वजह न घूमे	ई ईमानदारी से बताए गए नियमों का पालन करे	उ उम्र की अपेक्षाओं के अनुरूप जीवन शैली अपनाएं	ऊ ऊटपटांग खबरों से बचें।	ऋ ऋण योजनाओं का संपूर्ण लाभ उठाएं।
ए एहतियाती उपाय अपनाएं।	ऐ ऐसी वैसी अफवाहों से बचें।	ओ ओझा गुनी से इलाज ना कराएं	औ औरो सेसोशल डिस्टन्सिंग अपनाएं	अं अंगोछे का सतत प्रयोग करे	अः अन्तःकरण को मजबूत बनाएं	क कोरोना से डरें नहीं
ख खांसी आने पर मुंह ढकें	ग गुनगुने पानी का लगातार प्रयोग करें	घ घरेलू नुस्खों को अपनाएं ।	ङ --------	च च्यवनप्राश का प्रयोग करे	छ छींक आने पर नाक और मुंह ढके	ज जल का पर्याप्त मात्रा में सेवन करे
झ झोला छाप चिकित्सकों से बचें	ञ ----------	ट टहलते हुए भी सतर्क रहकर नियमों का पालन करें	ठ ठंडे पेय पदार्थो से बचें।	ड डर को अपने जीवन में शामिल न करें	ढ ढक कर रखे खाद्य प्रदार्थो का ही सेवन करे	ण ---------
त तकनीकी सुविधाओं का प्रयोग करे	थ थकान महसूस होने पर चिकित्सक से परामर्श लें	द दूध मे हल्दी मिला कर नियमित रूप से पिएं	ध धुले मास्क का प्रयोग करे	न नमस्कार से अभिवादन करें	प पशु पक्षियों का ध्यान रखें	फ फलों का सेवन करे
ब बीमार होने पर सूचित करे	भ भोजन नियमित समय पर करे	म मास्क का प्रयोग करे	य योग करे निरोग रहे	र राष्ट्रीय हितमे सहयोग करे	ल लोकल के लिए भोकल बने	व वृद्धों का ख्याल रखे
स स्वछता का ध्यान रखे	ष षड्यंत्र से बचे	श शांतचित रहे	ह हाथ न मिलाये	क्ष क्षेत्र के दायरे मे रहे	त्र त्रिफला आयुर्वेद	ज्ञ ज्ञान ही बचाव है

लगन

अनुपम कुमार, प्रबंधक

एक बार एक बूढी औरत कहीं से आ रही थी कि तभी उसने तीन मजदूरों को इमारत बनाते देखा। उसने पहले मजदूर से पूछा- ‘ तुम क्या कर रहे हो ?’ देखती नही, मैं ईटा ढो रहा हूं, उस मजदूर ने जवाब दिया।

थोड़ी देर बाद वह बूढ़ी औरत दूसरे मजदूर के पास गई और उससे भी वही प्रश्न किया- ‘ तुम क्या कर रहे हो ?’
‘ मैं अपने परिवार का पेट पालने के लिए मेहनत मजदूरी कर रहा हूं, ‘ उत्तर दिया।

फिर महिला तीसरे मजदूर के पास गई और पुन: वही सवाल किया- ‘तुम क्या कर रहे हो ?” उस व्यक्ति ने उत्साह से जवाब दिया- ‘ मैं शहर की सबसे भव्य इमारत बना रहा हूं।‘
दरअसल कार्यस्थल पर खुश रहना उतना कठिन भी नही1 हम अपना कार्य करते हुए खुश भी रहें जिसके लिए श्रेष्ठ स्थिति तो यह है कि हम अपनी हॉबी को ही अपना पेशा बना लें लेकिन ऐसा अधिकांश मामलों में संभव होता नही। सो क्यों नही हम अपने पेशे हो ही अपनी हॉबी बनाने की कोशिश की जाए ? जैसाकि उस तीसरे मजदूर ने किया।

आप जो भी कर रहे हैं, यदि उसके वास्तविक महत्व को समझें तो उसमें आनंद ढूंढ़ पाएंगे। स्टीव जॉब्स ने एक बार कहा था कि आपका काम आपकी जिंदगी का एक बड़ा हिस्सा होगा जिसमें आपकी संतुष्टि इस बात पर निर्भर करेगी कि आप अपने काम को कितना बड़ा समझते हैं। एक बात सदैव याद रखें, लगन के साथ किया गया आपका प्रत्येक कार्य एक सृजन है, बिल्कुल उसी तरह नवसृजन जैसे एक कवि की कविता, एक गीतकार का गीत या एक पेंटर की पेंटिंग।
अतएव उसी सृजन की भावना से आप अपने हर कार्य को प्रसन्न मन से पूरा करें और ऐसा करते हुए अत्यंत आनंद का अनुभव करें।

कारोना काल में कविता

तरुणकुमारसिंह
प्रबंधक- विपणनविभाग

हाथ जोड़कर के नमस्कार करो-ना
दूर से ही बात-चीत यार करो-ना

देख लो प्रकोप कैसा है जहान में
नॉनवेज का मिलके तिरस्कार करो-ना

वायरस अजीब आया ये वुहान से
फेफड़ों को ब्लॉक करता ये विधान से
फैलता ये वस्तु या किसी सामान से
मात इसको मिलती केवल तापमान से

मात इसको देने पर विचार करो-ना
मास्क का प्रयोग बार-बार करो-ना

हाथ जोड़ करके नमस्कार करो-ना
दूर से ही बात-चीत यार करो-ना

ये हवा में दस मिनट ही जागता रहे
वस्त्र पर मगर खुशी से भागता रहे
धातु पर भी कम नही है इसके आयुक्षण
तीन दिन शिकार ये तलाशता रहे

हैंडवाश दिन में कई बार करो-ना
लिख दिया है मैंने तुम प्रचार करो-ना
हाथ जोड़ करके नमस्कार करो-ना
दूर से ही बात-चीत यार करो-ना

एसडीएम ने बांटे मास्क व सेनेटाइजर

ग्राम्यवार्ता संवाददाता

मोहनलालगंज। कोरोना वायरस के चलते लॉक डाउन के दौरान अपनी जान जोखिम में डालकर ड्यूटी करने वाले गोसाईगंज व अमेठी क्षेत्र में तैनात बिजली, बैंक, स्वास्थ विभाग के डाक्टर, अधिकारी, कर्मचारियों का मंगलवार को मोहनलालगंज उपजिलाधिकारी पल्लवी मिश्रा ने पुष्प गुच्छ देकर हौसला अफजाई करने के साथ सुरक्षा के लिये मास्क व सेनेटाइजर भी बाटे। मोहनलालगंज उपजिलाधिकारी पल्लवी मिश्रा, ने गोसाईगंज क्षेत्र की यूको बैंक की मैनेजर दिव्या दीक्षित, फील्ड आफिसर आकांक्षा रस्तोगी, व स्टेट बैंक, बैंक आफ बड़ौदा, कारपोरेशन बैंक आफ इंडिया, विजया बैंक, यूनियन बैंक, आदि गोसाईगंज क्षेत्र की विभिन्न बैंक शाखाओं , स्वास्थ्य विभाग के डॉक्टरों व बिजली विभाग से जुड़े कर्मचारियों के साथ पुलिस कर्मियों का माल्यार्पण व उन्हें पुष्पगुच्छ देकर उनकी हौसला अफजाई करने के साथ सुरक्षा के लिये मास्क व सेनेटाइजर भी बाटे।एसडीएम पल्लवी मिश्रा ने कहा कि ऐसे सभी लोग बधाई के पात्र है जो यह जानते हुए भी बीमारी कितनी खतरनाक है फिर भी अपनी जान दांव पर लगाकर सेवाभाव से अपनी ड्यूटी कर रहे। इस मौके पर विनय वर्मा, बजरंग वर्मा, राजकुमार वर्मा मौजूद रहे।

500गरीब परिवारों के राशन की दूसरी खेप समाजसेवी ने एसडीएम को सौंपी

मोहनलालगंज। मोहनलालगंज तहसील क्षेत्र के 51राजस्व ग्रामो के 500 जरूतरमंद परिवारो को लाकडाउन के दौरान भुखमरी से बचाने के लिये उनको राशन सहित जरूरत का सामान उपलब्ध कराने का बीड़ा उठाने वाले इन्डो अमेरिकन चैम्बर आंफ कामर्स लखनऊ चैप्टर के चैयरमैन व समाजसेवी मुकेश बहादुर सिहं ने सभी 500परिवारो को दी जाने वाली राशन की दूसरी खेप मंगलवार को मोहनलालगंज तहसील पहुंचकर एसडीएम पल्लवी मिश्रा को सौपी।एसडीएम ने बताया समाजसेवी द्वारा सौपे गये राशन सहित जरूरत के सामान के पैकेट राजस्वग्रामो के जरूरतमंदो को भिजवाये जायेगे।

सपनों की कीमत

ईना शर्मा

सुशीला को बचपन से ही बड़े शहर जाने का बहुत शौक था। बड़ी भव्याकार इमारतें, लंबी चौड़ी सड़कों पर घूमने की कल्पना उसे अद्भुत लगती। वहां सब कुछ कितना सुंदर और शानदार होगा। सुशीला की मां को उसके इस तरह के सपने देखने पर डर लगता। उसकी मां को इस हकीकत का अहसास था कि बलिया जैसे छोटे गांव में पली पुसी अपनी बेटी को कैसे बड़े शहर भेज पाएंगे भला। सुशीला पूरे गांव में घूम घूमकर बस यही बोलती रहती- देखना, एक दिन मैं शहर जाऊंगी जरूर और वहीं रहूंगी, हां।'

धीरे धीरे सुशीला बड़ी होती गयी। घर वाले पास के गांव से रिश्ते भेजने लगे परंतु सुशीला ने तो शहर की जिद पकड़ ली थी। उसकी चाची ने उसे बोला भी- ' सुनो, तुम मेरे भाई से शादी कर लो। उसकी पहली बीवी मर चुकी है परंतु मेरा भाई शहर में काम करता है सो तुम वहीं रहना उसके साथ। तुम्हारे शहर का सपना भी साकार हो जाएगा और मेरे भाई का घर भी बस जाएगा।' यह सुनकर सुशीला की आंखों में विशेष चमक उभर आई। सालों से उसका शहर में जाकर बसने का सपना जो पूरा हो रहा था।

सुशीला के घर वाले पहले तो उससे 7 साल बड़े आदमी से उसकी शादी करने के लिए तैयार नही हो पा रहे थे परंतु लड़की का मन रखने के लिए वे उसे दुखी नही करना चाहते थे। सुशीला की जिद के चहते उन्होंने उसकी शादी शहर में रहकर गुजर बसर करने वाले रमेश से कर दी।

आंखों में बड़े सपने लिए सुशीला अपने घर से विदा होकर ठुमकते हुए चल दी लखनऊ शहर की ओर जो उसके सपनों का चमकीला शहर था। विदाई के समय एक दुल्हन की आंखों से निकलने वाले आंसुओं से अलग थे सुशीला के आंसू, खुशी के आंसू थे वे । वर्षो से संजोया सपने के पूरा होने के आंसू थे वे।

सजी धजी सुशीला शहर जाने वाली बस की खिड़की से बाहर ऐसे देख रही थी मानो एक एक लम्हा अपनी मंजिल के करीब आने का संकेत दे रहा हो। बस लखनऊ सीमा के अंदर प्रवेश करने लगी और सुशीला की आंखें भी शहर की सुंदरता की तरह बड़ी होने लगीं। बस लखनऊ के आलमबाग बस अड्डे पर आकर रूकी। सुशीला ने अपनी बड़ी बड़ी आंखों से देखा जिनमें आश्चर्य, कौतुहल और खुशी का समंदर हिलोरें ले रहा था। सुशीला ने प्यार से रमेश की तरफ देखा और सबसे पहले आश्चर्य भरे बोल उसके गले से निकले- ' इतनी बड़ी इमारत! बस, केवल बसों के रूकने की जगह है ये ?'

रमेश मुस्कराकर बोला- अभी आगे देखती जाओ। इतना सब शानदार और खूबसूरत है कि देखते देखते तुम्हारी आंखें थक जाएंगी, हां।' किसी भोले मासूम शिशु की तरह सुशीला खुशी के मारे ताली बजाने लगी- वाह, क्या बात है।

फरवरी के महीने में यह शहर और भी खूबसूरत लग रहा था। चारेां तरफ साफ सुथरी सड़कों पर हवाएं चल रही थी। आसपास लगे पेड़ों पर अमलतास के सुंदर फूल खिल रहे थे। सुशीला तो पहली बार अपने गांव से बाहर निकल रही थी मगर उसकी स्मृतियेां में गांवों की तंग गलियां घूम रही थी मगर यहां की खुली और इतनी लंबी चौड़ी सड़कें देखते हुए वह खुश होकर बार बार खिड़की से बाहर देखती रही, सचमुच, सब कुछ कितना सुंदर और भव्य है।

जल्दी ही दोनों शहर के एक बहुत बड़े एवं विकसित हिस्से में आ गए। यहां उन्हें किसी निर्माणाधीन भवन में रहना था और यही रहकर निर्माण कार्य करवाना था। इस इमारते में चार परिवार और भी रहते थे और सभी मिलजुलकर रहते, खाते पकाते और एक साथ काम पर जाते। सुशीला को यह सब देखकर धक्का लगा मगर यह सोचकर चुप रह गयी कि उसके सपनों में तो बस शहर था। शहर की आबोहवा में वह बाकी सपनों को बिसरा देगी।

एक महीने तक वे इस इमारत में रहे। उसने काफी ऐतिहासिक इमारतें घूम लीं। उसके सपने क्रमश: पूरे होते दिख रहे थे। सब कुछ अच्छा चल रहा था कि एक दिन अचानक उस भवन के मालिक ने आकर बताया- ' सरकार ने सब जगह कर्फ्यू लगा दिया है सो यहां काम धाम ठप्प होगा। कोई बीमारी भयानक रूप से चारों तरफ फैल रही थी। अब काम नही होगा। कोई कहीं आ जा नही सकता था। सबको बंद होकर रहना पड़ेगा। कोई कहीं बाहर नही निकलेगा, समझ गए न ?'

सारा शहर, एक पल में बंद होने लगा। सारी दुकानें बंद, सड़कों पर आवाजाही बंद, लोग घरों में बंद। इतने बड़े शहर को जैसे किसी ने एक पल में रोक दिया हो। दस दिन में ही उनका राशन खत्म हो गया। कहीं से लाया नही जा सकता था। सब कुछ तो बंद था। पैसे दिहाड़ी पर मिलते थे जो बंद हो गए। मालिक ने साफ बोल दिया- ' काम नही तो पैसा किस बात का ? हम तुम्हें यहां रहने दे रहे है, यही बहुत है। अपना इंतजाम खुद करो।'

दो तीन दिन तक कोई आकर कुछ न कुछ दे जाता परंतु उससे भूख खत्म नही होती। चार परिवार और खाने वाले बीस लोग। बस, जो भी थोड़ा बहुत मिल जाता, वे किसी तरह गुजर बसर करने की कोशिश करते मगर पूरा नही पड़ता था। कई बार रात को भूखे ही सोना पड़ता।

सुशीला को अब इस निर्माणाधीन भवन की दीवारों और छतों को देखकर अपने गांव की गलियां और हरे भरे पेड़ों की याद आने लगी जहां अमरूद के पेड़ पर चढ़कर वह खूब मीठे अमरूद छांट लेती थी। आज यह शहर उसे रास नही आ रहा था1

यहां कोई किसी की मदद के लिए नही आता जब कि गांव में कोई कभी भूखा नही सोया। यहां इतने बड़े शहर में कोई किसी को पूछता तक नही जब कि वहां सब एक दूसरे का हालचाल लेते रहते। बड़े घर के लोगों के दिल बड़े नही हैं, सुशीला को इस सचाई का अहसास हुआ और कई कडवे अनुभ्वों से वह रोज ही गुजरती। आज तो सुशीला का बस एक ही सपना था, किसी तरह अपने गांव वापस निकल जाएं। यह सोचते हुए सुशीला की आंखों से आंसू झरने लगे। यहां तो सब जगह दुख ही दुख नजर आने लगे।

थोड़े समय बीतने के बाद सुशीला को साथ में रहने वाली एक दीदी दिखी। सुशीला ने साथ में रहने वाले परिवारों के हितों की रक्षा के लिए एक दिन उनसे मदद मांगी । उनकी हालत और बच्चों के रोने की आवाज सुनकर दीदी की आंखों में आंसू आ गए। मुस्कान ने राशन लाकर उन्हें दे दिया और एक वादा किया कि जब तक आप लोग यहां हैं, हमसे जो भी बन पड़ेगा, अवश्य करेंगे।

सुशीला और मुस्कान रोजाना दुपहर में मिलकर खूब बातें करते। सुशीला उन्हें गांव के किस्से सुनाती और मुस्कान शहर की बातें करतीं। मुस्कान ने एक दिन कहा- यदि तुम्हारा गांव इतना अच्छा है तो वापस चली जाओ। कम से कम खाना तो मिलेगा दो टैम का।‘ हूं, ठीक कहा आपने. . सुशीला ने हामी भरी।

एक दिन सुशीला नही दिखी मुस्कान को। उसके बाद कई दिन तक उस इमारत में कोई नही दिखा। मुस्कान ने पता किया तो पता चला कि सरकार की राहत के बाद सारे मजदूर अपने गांव चल गए हैं। सुशीला मुस्कान के लिए एक पर्ची छोड़ गयी थी- ‘ दीदी, धन्यवाद , हम अपने घर, अपने गांव जा रहे हैं। आप हमसे मिलने बलिया आना। शहर में अब हम कभी नही आएंगे ।‘

‘ अरे, उसे बताकर जाना चाहिए था, सोचते हुए मुस्कान की आंखें नम हो गई।

इधर सुशीला जिस बस से वापस जा रही थी, उसकी खिड़की से बहार देखते हुए फिर से उस पल का इंतजार कर रही थी जिस पर वो गांव की सड़क पर कदम रखेगी जिस पर चलकर वह शहर गयी थी, वहां अब वापस कभी नही आएगी वह।

आंखों में आज भी चमक थी परंतु इस बार शहर के लिए नही बल्कि अपने गांव के लिए थी। अपनी जड़ों की कीमत क्या होती है, इस सचाई का अहसास पहली बार उसे हुआ कि अपनी जमीन, अपनी माटी से बढ़कर कुछ भी अच्छा कभी नही होता।

वरिष्ठ प्रबंधक (मानव संसाधन विभाग)

जी.डी.बिड़ला व्याख्यानमाला का आयोजन - संकल्प राजभाषा 2020

30 जनवरी 2020 को लखनऊ स्थित होटल रणवीर, गोमतीनगर में जी.डी.बिड़ला व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। प्रधान कार्यालय की अपेक्षानुरूप इस कार्यक्रम में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के संयोजक श्री परिमलेंदु सिन्हा, उपमहाप्रबंधक (राजभाषा) भारतीय रिजर्व बैंक सहित अन्य बैंकों से आए विभिन्न राजभाषा अधिकारियों की उपस्थिति ने इस कार्यक्रम को समृद्ध बनाया। मां सरस्वती पूजन , माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन के बाद इस कार्यक्रम की विधिवत शुरूआत हुई।

सबसे पहले नराकास के संयोजक सदस्य भारतीय रिजर्व बैंक के उपमहाप्रबंधक श्री परिमलेंदु सिन्हा जी ने संगोष्ठी के विषय- ग्रामीण अर्थव्यवस्था: निवेश एवं वित्त पोषण (उत्तर प्रदेश के संदर्भ में) के बारे में अपनी राय रखते हुए आज के दौर में ग्रामीण अर्थव्यवस्था की राह में आ रही चुनौतियों एवं संभावनाओं पर चर्चा की। ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास के लिए क्या क्या चुनौतियां हैं एवं निवेश के ऐसे कौन से विकल्प या अवसर हैं जिससे विकास की मुख्य धारा तक हमारे गांवों का कायापलट हो सके। हमारे बैंक गांवों तक जाकर निवेश के नए अवसर कैसे सृजित करने में सक्षम होंगे, इस तरफ सोचने की जरूरत है। चूंकि हमारे प्रदेश का अधिकांश भाग ग्रामीण क्षेत्र में है जिसकी रीढ़ कृषि ही है अतएव इसे सशक्त करने से अर्थव्यवस्था सशक्त बनेगी। इस संबंध में हमारे जो मानदण्ड व चुनौतियां हैं, उन सब पर ध्यान एकाग्र करने की आवश्यकता है। गांवों को समुन्नत बनाने के लिए उद्यमिता संवर्धन की दिशा में सोचने की जरूरत है। सरकार, बैंक और जनमानस को विकास के नए आयामों पर नए सिरे से सोचना होगा कि वित्त पोषण किस तरह किया जाए।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ.प्रोफेसर मुजम्मिल जी ने अपने लंबे वक्तव्य में ग्रामीण अर्थव्यवस्था के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पहलुओं पर मंथन करते हुए भारतीय अर्थव्यवस्था के ऐतिहासिक, भौगोलिक परिस्थितियों एवं सामाजिक ताने बाने पर सुदीर्घ चिंतन की धारा को आज के संदर्भो से जोड़ा। हमारे देश में कृषि व्यवसाय नही है बल्कि जीवन पद्धति है । हमारे यहां उद्यमिता की संस्कृति नही है । वैसी लाभप्रदता की प्रबल प्रतियोगी भावना हमारे देश में उतनी नही है जितनी होनी चाहिए। कृषि एवं सिचाई क्षेत्र में देश की पंचवर्षीय योजनाओं का विस्तार से जिक्र करते हुए प्रोफेसर मुजम्मिल जी ने 1951 से लेकर आज तक की स्थिति पर चर्चा करते हुए कहा कि प्रदेश का पशुपालन, मत्स्य पालन, कुटीर उद्योग एवं अन्य एमएसएमई उत्पादों को नए सिरे से सशक्त बनाना होगा। पानी, बीज एवं संसाधन, प्रोसेसिंग आदि पर ध्यान देना होगा।

उत्पादन के बाद (पोस्ट प्रोडक्शन) ग्रामीण उद्योग सामाजिक सेवा भाव का से कितने जुड़े हैं या इनका आउटपुट क्या है, यह सब देखना होगा ताकि हमारे बैंकों द्वारा दिया गया ऋण दिशाहीन न होने पाए। आय को दुगुना करने के लिए *ट्रेड लाइक* अवधारणा विकसित करने की आवश्यकता है। गांवों में आज भी सड़क, पुल, वाहन एवं जल संसाधनों को विकसित करने की योजनाएं बननी चाहिए। बैंकों के योगदान से इस तरह से हमारे गांवों की पुर्नसंरचना होगी। सरकार द्वारा चलाई गई ऋण माफी योजनाएं कुछ समय के लिए फायदेमंद होती है मगर किसानों के हितार्थ नई योजनाएंए बननी चाहिए। हम अभी भी विकसित देशों से काफी पीछे हैं। ग्रामीण अर्थव्यवस्था को आगे ले जाने के लिए वित्त की आवश्यकता पड़ती है जिसके लिए हम सारे बैंक मिलकर योगदान दें तो विकास यात्रा सुदूर क्षेत्र तक प्रभावी होगी। उन्होंने ज्ञान की धाराओं का उल्लेख करते हुए कहा कि हम 25 प्रतिशत ज्ञान अपने मां पिता व गुरूओं से , 25 प्रतिशत किताबें पढ़कर तो 25 प्रतिशत आपस में विचार विमर्श करके लेकिन अंतिम 25 प्रतिशत तो जीवन जीकर अनुभव अर्जित करके ही ज्ञान अर्जित कर सकते हैं।

तदुपरांत अंचल कार्यालय की मुख्य अधिकारी (राजभाषा) ने यूको बैंक के संस्थापक जी.डी.बिड़लाजी के जीवनवृत्त से संबंधित आवश्यक जानकारी दीं। फिक्की, बिड़लामंदिर श्रृंखला एवं अस्पताल खोलने जैसे सामाजिक कार्यो के अलावा बिड़लाजी ने महात्मागांधी के निकटतम सहयोगी के रूप में देश की विविध योजनाओं में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। उनकी लिखी कई कृतियों में उनके चिंतनशील व्यक्तित्व के बारे में पता चलता है। यूको बैंक के संस्थापक के रूप में आज हम उन्हें याद कर रहे हैं।

तदुपरांत श्री ओ.पी.वर्मा, अंचल प्रबंधक ने यूको बैंक के संस्थापक बिड़लाजी से जुड़ी कुछ महत्वपूर्ण बातें बताते हुए बैंक के सकल कारोबार से जुड़ी कई बातों को साझा किया। ग्रामीण अर्थशास्त्र से जुड़ी जरूरी जानकारी देते हुए अंचल प्रमुख ने देश भर में यूको बैंक की शाखाओं एवं विदेश में स्थित शाखाओं के बारे में विस्तार से बताते हुए यूको बैंक से जुड़ी योजनाओं के बारे में सूचित किया । कार्यक्रम के अंत में मुख्य अतिथि श्री मुजम्मिल जी ने श्रोताओं के सवालों का जवाब देते हुए बैंकिंग से संबंधित आवश्यक जानकारियां प्रदान की। मंदी के कारणों का जिक्र करते हुए उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि विकास (ग्रोथ) एक स्वाभाविक प्रक्रिया है पर डेवलपमेंट सजग ढंग से किए गए समेकित प्रयासों का सुपरिणाम होते हैं।

यूको बैंक

यूको बैंक जी. डी. बिड़ला स्मृति
व्याख्यानमाला

नराकास बैंक, लखनऊ के तत्वाधान में संपन्न प्रतियोगिता पुरस्कार

नराकास बैंक, लखनऊ की अर्धवार्षिक बैठक में अंतरबैंक प्रतियोगिताओं में यूको बैंक को लघु कहानी प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। सचिव, रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ,लखनऊ द्वारा द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया ,पुरस्कार विजेता श्री तरूण कुमार, विपणन विभाग में प्रबंधक, पद पर कार्यरत हैं। पुरस्कृत कहानी सहर्ष प्रकाशित की जा रही है-

कोयल

बस गाँव आने वाला है । लखनऊ जैसे शहर में पली-बढ़ी मै पहली बार ससुराल वाले गाँव जा रही हूँ ,वो भी अपनी सासूमाँ के साथ । साड़ी , घूँघट और सासूमाँ के उपदेश कि 'कम बोलना' , 'नजरें ना मिलाना' , 'बड़ो के पैर छूना' और जाने क्या क्या ? इतनी घबराहट तो तब भी न थी जब शादी के बाद लखनऊ वाली ससुराल आई थी । खैर वहाँ तो कोई रोक-टोक नही थी, पर यहाँ परिस्थितियों के अनुसार ढलना पड़ेगा । लो ये सब सोचते-सोचते खड़ंजे से होते हुए हमारा घर आ गया ।

गाँव की आबादी से थोड़ा हटके एक कोने में आम के पेड़ों के बीच बना ये घर बहुत सुंदर है ,साथ में शानदार दुआरा और सामने बड़ा सा मैदान । दूर से तो ऐसा लग रहा था कि ये एक बड़ा सा बाग है । कार से पैर निकाले ही थे कि लाल रंग से लबालब थाली मेरे पैरों के नीचे आ गई । दादी की आवाज आई - "आज तो लक्ष्मी जी स्वयं पधारी हैं । हमे तो सुबह ही पता चल गया था कि तुम आने वाली हो जब कोयल शोर मचाये पड़ी थी । बहू! रंग में पैर डुबोकर दहलीज पर पैरों के निशान बनाते चलो ।" वैसे ऐसा करने में अलग सी खुशी भी मिली ।

गाँव वालों को खबर क्या लगी , लोगो के आने का क्रम ऐसा चला कि सारा दिन मुँह-दिखाई मे ही गुजर गया और रात में सासूमाँ ने दादी के पास पैर दबाने और पुण्य कमाने के लिए भेज दिया । मुझे दादी से थोड़ा डर तो लग रहा था पर हिम्मत करके मै उनके कमरे मे गई और पैर दबाने लगी। दादी ने पूछा कि गाँव मे कैसा लग रहा ? मै कुछ जवाब देती लेकिन मुँह से आवाज तक न निकली । दादी बोली - लगता है तुम्हारी सास ने तुम्हे बहुत डरा दिया है पर डरो मत! मै पुराने ख्यालों की नही हूँ । आठवीं पास हूँ और जब ब्याह होकर इस गाँव मे आई थी तो सब मास्टरनी कहते थे । गाँव की पहली शिक्षित बहू । तुम अपनी सहेली समझकर मुझसे बात कर सकती हो । मुझे थोड़ा अच्छा लगा और मैंने एक सवाल पूछ ही लिया - दादी जब मै आई तो आप कह रही थीं कि आपको पहले पता चल गया था, वो कैसे ? दादी जोर से हँसी और बोलीं- दोपहर से तुम्हे ये बात सताये जा रही है । हम व्हाट्सएप वाले जमाने के नही हैं । हमारे समय मे तो चिट्ठी से हालचाल , सूरज के उगने-डूबने से वक़्त और खाने की महक से बनाने वाले का बर्ताव पता चलता था । पेड़-पौधे , पशु-पक्षी और हवायें यहाँ गीत सुनाती हैं । किसी और चीज की जरूरत ही नही है । और ये तुम्हारे आने की खबर तो हमे सुबह कोयल ने ही दे दी थी । कुछ दिन में तुम सब समझ जाओगी । जाओ अब जाकर सो जाओ । सुबह जल्दी उठना तो आम के बाग में चलेंगे । दादी की बातों में इतनी मिठास है कि क्या बोलूँ । मै उठी और अपने कमरे मे सोने चली गई । मै ये तो बताना ही भूल गई कि मेरे पतिदेव और ससुर जी दिल्ली गए हैं । एक घर खरीद रहे हैं उसी सिलसिले में इसलिए हफ्ते भर हम गाँव मे रहेंगे । एक तो फोन में नेटवर्क नही आ रहा इसलिए जगने का कोई फायदा ही नही । सो ही जाती हूँ , वैसे भी सुबह पाँच बजे दादी के साथ आम के बाग में घूमने जाना है ।

यहाँ गाँव मे तो कुदरत खुद आके उठा जाती है । चिड़ियों की चहचहाहट, ठंडी हवा के झोंके और मुर्गे की बाग किसी अलार्म से कम थोड़े न होते हैं । सुबह के चार बजे रहे हैं और ऐसा लग रहा है जैसे कि आज पहली बार मैंने शुकून की नींद ली है । इतनी सुबह पहली बार उठी हूँ पर फिरभी बहुत तरो-ताजा महसूस कर रही हूँ । मैंने नहा-धोकर किचन में गरमागरम चाय बनाई और दादी को उठाने चली गई । पर दादी तो पहले से उठी हुई थी और सासूमाँ से बतिया रही थीं । मुझे देखकर उनकी आँखों मे चमक आ गई । दादी बोली - हमे तो लगा था कि पाँच बजे तुम उठ पाओगी या नही पर तुमने तो दिल ही जीत लिया । सासूमाँ के आँखों की चमक बता रही थी कि मैंने आज उनकी लाज रख ली । हम और दादी थोड़ी देर बाद आम के बाग की ओर निकल लिए ।

पगडंडी वाले उस रास्ते पर चलते हुए दादी मुझे हमारे खेत और फसलों के बारे में बहुत सी बातें बताती जा रही थीं । सरसों की पीली चादर में लिपटी धरती तो दिलवाले दुल्हनिया ले जायेंगे फ़िल्म की याद दिला रही थी । थोड़ी देर में हम बगिया पहुँच गए । उस बगिया में एक बड़ा सा तालाब भी था ,जिसमे मछली पालन भी होता है । इतने बड़े तालाब में प्यारी प्यारी मछलियों को देखकर वो घरों में बने काँच के मछलीघर तो बेमानी लगने लगे । आम के बड़े बड़े पेड़ और चारो तरफ पक्षी ही पक्षी । सब कुछ किसी फिल्म के दृश्य जैसा सुंदर और मनमोहक लग रहा था ।

मैंने दादी से कहा - दादी गाँव आकर बहुत अच्छा लग रहा है । दादी बोली - मुन्ना की याद नही आ रही । दादी ! बहुत याद आ रही पर यहाँ फोन में नेटवर्क ही नही आता । बात कैसे करूँ? ये कहते कहते मेरी आँखों मे आँसूँ आ गए । दादी ने सिर पर हाथ फिराया और बोलीं - इसमें रोने वाली कौनसी बात है । हमारे जमाने मे नेटवर्क तो क्या फोन भी नही थे फिरभी मेरी बात तुम्हारे दादाजी से हो जाती थी । मैंने कहा - वो कैसे ? फिर दादी बताने लगी - जब मन के तार जुड़े हों तो किसी नेटवर्क की जरूरत नही होती । अपनी बात इस हवा से कहो और ये संदेशा वहाँ तक पहुंचा देगी । जैसे कल सुबह कोयल ने तुम्हारी खबर मुझतक पहुंचाई थी । तभी अचानक मेरे फोन की घंटी बजी । देखा तो उनका फोन आया था , मै तो घंटी की आवाज सुनकर दंग रह गई कि नेटवर्क कैसे आ गया अचानक । तभी दादी बोलीं - मुन्ना का फोन आया होगा बात कर लो वर्ना नेटवर्क चला जायेगा और हँसते हुए वो थोड़ा दूर चली गईं । थोड़ी देर ही बात हुई पर मन को बड़ी खुशी मिली । कभी कभी तो लगता है कि दादी जादूगर हैं।

थोड़ी देर टहलने के बाद दादी और मै घर आ गए । दिनभर दादी के किस्से-कहानी और बातें सुनकर बहुत मजा आता और इसतरह कब पाँच दिन बीत गए पता ही नही चला । शुक्रवार का दिन था , सुबह से ही कोयल बार-बार मेरे सामने आती और कुहुकने लगती । दादी के साथ बगिया जाते वक्त भी कोयल मेरे ऊपर से गुजरे और आवाज करने लगे । मैंने परेशान होकर दादी से पूछा- दादी ये कोयल आज इतना शोर क्यों मचा रही मेरे पास आकर । दादी हँसने लगी और बोलीं- तुमको बताने आई है कि आज वो आने वाला है जिसकी तुम राह देख रही हो । मैंने भी दादी से बोला - अरे दादी ऐसे थोड़ी न होता है । वैसे भी वो तो रविवार से पहले कहाँ आयेंगे । उनका टिकट ही रविवार का है आप भी न दादी । खैर दादी फिरभी अपनी बात पर पूरी तरह आश्वस्त थीं । उन्होंने कहा - तुमलोग ट्वीटर वाली चिड़िया पर ज्यादा भरोसा करती हो और हम इस असली वाली चिड़िया पर । कुछ देर बाद बगिया घूम कर हम लोग घर लौट आये।

न जाने क्यों बेचैनी हो रही थी , किसी काम मे मन ही नही लग रहा था । मै छत पर जाकर टहलने लगी । तभी दूर से धूल उड़ाता हुआ एक ट्रैक्टर दिखाई दिया । वो सीधा अपने घर की तरफ आ रहा था । मै भाग कर दुआरे पर गई । पीछे से दादी भी बाहर आ गई । थोड़ी देर में ट्रैक्टर घर पर आकर रुका और उसपे से मेरे पतिदेव उतरे । उन्हें देखते ही मेरी आँखों से गंगा-जमुना बहने लगी और होंठों से बस ये निकला- "हमे तो सुबह ही पता चल गया था कि आप आने वाले हो । हमे कोयल ने बता दिया था ।" ये सुनकर दादी भी हँस पड़ी और मै भी ।

तरुण कुमार सिंह

अगले 6 महिने हमें कैसे रहना होगा:

- भले ही लाकडाउन समाप्त हो जाए मगर अब ये सावधानियां बरतना आवश्यक हैं।।

1. मास्क
2. हेंड सेनेटाइज
3. सामाजिक दूरी
4. अति आवश्यक होने पर ही बाहर जाएंगे।
5. दाढी न बढायें।
6. कटिंग कराने सैलून न जाएं। शेव स्वयं करें या फिर नाई को घर बुलाया जाए। उसने मास्क पहना हो। उसके हाथ साफ करवाये। कंघी, कैंची, ब्लैड ,रूमाल आदि सब सामान हमारे होने चाहिए।
7. बेल्ट नहीं पहनो,अंगूठी ,कलाई घडी आदि न पहने। मोबाइल आपको समय बता ही देता है।
8. हाथ रूमाल का उपयोग नहीं करें। सेनेटाइजर और टिश्यू पेपर साथ रखें और जब जरूरी हो इस्तेमाल करें।
9. घर मे जूते पहनकर घर में प्रवेश न करें, उन्हें बाहर ही उतारें।
10. बाहर से घर आने पर बाहर ही हाथ और पैर धोकर ही घर में प्रवेश करें।
11. यदि आपको लगता है कि आप किसी संदिग्ध के संपर्क में आ गये हैं तो पूरा स्नान करें, भाप लें, गर्म काढ़ा पियें।

लाकडाउन हो या न हो अगले 6 से 12 महीने तक ये सावधानियां अति आवश्यक हैं।

कृपया इस पोस्ट को अपने परिवार, मित्रों के साथ अधिक से अधिक शेयर करें।

समय समय की बात

-मोहिनी बाजपेयी

समय समय की बात है, ये समय भी निकल जाएगा
आंखों से निकला हर आंसू, मुस्कराहट में बदल जाएगा

हम रहें या न रहें, इस मुस्कान के दीदार के लिए
इक ये विश्वास है कि ये समय भी जरूर जाएगा

पलकों पर एक सपना सजा, दिल में एक विश्वास है
कहीं तो कोई है हमारा भी, जिसके लिए हमारी रूंह भी बेचैन है

वो भी एक दौर था, जब हम अकेले ही मस्त थे,
खालीपन या तन्हाई शब्दों से, सदा दूर ही रहते थे

जीवन किस मोड़ पै लेके आया है, कि भीड़ में भी खोए से रहते हैं
सोचे कि इस रात की कोई सुबह न होगी, मगर ये भी समय निकल जाएगा

हंसते मुस्कराते रहना है हमको, खुशियों को अपने अंदर ढूंढना है हमको
अब ये रात भी ढलने वाली है, एक नई सुबह जो दस्तक दे रही है

अच्छा लग रहा है कि इस दस्तक के अहसास से
क्यूं कि अब ये सुबह अपने साथ खुशियां ही खुशियां लाएगी

दुनिया-कोरोना पूर्व और कोरोना उपरांत

सारिका गुप्ता
विशिष्ट सहायक

कोरोना वैश्विक महामारी ने जिस तरह से मानव जाति को हानि पहुंचाई है और दुष्प्रभाव डाला है ,उसे देखते हुए अगर आज की दुनिया को दो कालखण्डों में बांट दिया जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी-

दुनिया कोरोना पूर्व

दुनिया कोरोना उपरांत

कोरोना पूर्व की दुनिया से तो सभी भली भांती परिचित है,परंतु आज के हालत को देखते हुए अनुमान लगाया जा सकता है की बाद की दुनिया कैसी होगी.

मेले, महोत्सव सत्संग आदि

भारत मे हर वार त्योहार पर कहीं ना कहीं कोई मेला महोत्सव ,सत्संग आदि चलते ही रहते हैं,परंतु अब इन पर बहुत हद तक रोक लगेगी. जिस जगह भी ज्यादा भीड लगने की उम्मीद होगी ,लोग वहां जाने से बचेंगे. अब प्रवचन ,सत्संग सब ऑनलाईन होंगे.बाबा लोगों की कमाई और चेलों की संख्या में कमी आने की उम्मीद है. मेले महोत्सव की बिक्री भी ऑनलाईन होगी. छूट और बचत की सुविधा भी ऑनलाईन मिलेगी,देखो और खरीदो.

पूजा स्थल

पूजा स्थलों पर भी अब कम भीड लगेगी.सामाजिक दूरी का ख्याल रख कर दर्शन होंगे. दर्शन भी अब ऑनलाईन होने लगे हैं,और चढावे और प्रसाद भी ऑनलाईन चढने लगे हैं.

शादी समारोह

भारत में शादी समारोह कई दिन का एक गहन और खर्चीला कार्यक्रम होता है. उस पर भी अब लगाम लगेगी.कम समय और कम लोगों के बीच ही विवाह कार्यक्रम सम्पन्न होनें लगेंगे तो खर्चा

भी बचेगा. ऑनलाईन ही शादी तय होंगी, ऑनलाईन ही लोग विवाह में शरीक होंगे,और व्यवहार और भेंट देंगे. सबके समय की बचत होगी.

मृत्यु संस्कार

मृत्यु पर भी बहुत भीड लग जाती है .आधी तो लोकलाज के कारण आती है. वह भी अब कम होगी. जल्दी और कम लोगों में ही संस्कार पूरे हो जाएंगे. इससे कर्मकाण्ड कराने वाले पंडितों और मौलवियों की कमाई पर विपरीत असर पडेगा.

अराजक तत्व

बहुत से अराजक तत्वों के धंधे ,जैसे भीड मे जेब काटना, चेन खींचना, उठाईगिरी ,चोरी,छेड-छाड आदि कम हो जाएंगे और उन्हें वैकल्पिक धंधों की तरफ मुढना पडेगा. भिखारियों का धंधा भी मंदा हो जाएगा.स्वयंसेवी संस्थाओं को उनकी मदद को आगे आना पडेगा.

प्राईवेट नौकरियों से मोह भंग,बेरोजगारी

प्राईवेट सेक्टर की अनिश्चितता देखते हुए सरकारी नौकरियों में लोगो का मोह बढेगा.बहुत से लोग जो कोरोनाकाल में बेरोजगार हो गए हैं अब अपने धंधे और ऑनलाईन व्यापार की ओर अग्रसर होंगें

पढाई लिखाई

इस क्षेत्र में भी बहुत परिवर्तन आएंगे. घर से ही ऑनलाईन कक्षा ,पढाई ,इम्तहान और साक्षात्कार का चलन चलने लगेगा. होशियार बच्चो को तो नहीं पर ,कम पढने वाले बच्चों को ये परिवर्तन बहुत अच्छा लगेगा.

ऑनलाईन व्यापार और भुगतान

अब ज्यादातर व्यापार ,खरीद फरोख्त ऑनलाईन ही होगी. घर बैठे ही दुनिया भर के सामान और विकल्प मिलेंगे तो लोग ,खास तौर पर युवा वर्ग और ज्यादा खरीदारी करेंगे .सूचना प्रौद्योगिकी में जबरदस्त बाढ आ जाएगी.सब तरह के बिलों का भुगतान और बैंकिंग भी अब लम्बी लम्बी लाईनों में ना लग कर ,ऑनलाईन होंगे.

ऑनलाईन धोखाधडी

ऑनलाईन धोखाधडी में भी अब बाढ आ जाएगी. अब जो शातिर दिमाग के लोग हैं उनका दिमाग अब इस खुराफात की तरफ मुड जाएगा. सारी सूचना जब नेट पर उपलब्ध होगी ,तब उनका दुरुपयोग और गैर कानूनी उपयोग भी होगा. अभी भारत की आम जनता सूचना प्रौद्योगिकी में अभ्यस्त भी नहीं है ,इसलिये बहुत चूक होंगी, जिनका फायदा गलत लोग उठाएंगे.आने वाले समय में बहुत सावधानी की जरूरत होगी.

इंसान अपनी सूझबूझ और जीजिविषा से हर मुसीबत का सामना सफलतापूर्वक करता आया है और करता रहेगा. समय और परिस्थितियां तो हमेशा ही बदलते रहे हैं . अब जरूरत है प्रकृति के साथ समंवय बनाने का ,उसे अपना भक्षक नही ,रक्षक और पालनहार बनाने का

असली आभूषण

- मंजू वर्मा

कल्याणपुर नगर में विक्रम नाम का राजा था जो बहुत ही धर्मात्मा और सिद्धांतों वाला था। आम जनता की तरह वह भी खेती करता था और उससे पैदा अनाज क्षरा अपनी आजीविका चलाता था। जनता से प्राप्त कर अन्य चीजों का प्रयोग वह जनता के हित में ही करता था1 एक बार नगर में उत्सव का आयोजन किया गया। सभी लोग अच्छे वस्त्र और आभूषणों से सुसज्जित होकर आए लेकिन राजा रानी सामान्य वस्त्र पहनकर ही आए। वहां उपस्थित कुछ स्त्रियां रानी के पास आकर बोली- 'आप तो हमारी मालिकन हैं। फिर आपको हमसे ज्यादा अच्छे से तैयार होना चाहिए था।' रानी उस समय तो चुप रहीं लेकिन रात को राजा से गुस्सा होकर बोली- 'आपके विचारों की वजह से आज मेरा मजाक बन गया। लोग मेरे पहनावे और आभूषणों पर चर्चा कर रहे थे कि हम कितने सामान्य ढंग से रहते हैं।' राजा ने कहा- ' ठीक है, मैं कुछ व्यवस्था करता हूं।'

अगले दिन राजा ने अपने एक व्यक्ति को पास के ही दूसरे राज्य के राजा कौशल के पास ऋण के लिए भेजा लेकिन उस राजा ने ऋण देने से मना कर दिया। यह बात जब राजा कौशल की पत्नी को पता चली तो उन्होंने आग्रह किया कि आप उसे ऋण दे दें । राजा ने कहा कि क्या मैंने आज तक किसी को कुछ दिया है जो उसे दे दूं ? यह सुनकर रानी को चिंता हुई क्यों कि वह राजा विक्रम के प्रभाव को जानती थी। दूसरे दिन रानी राजा को महल की छत पर ले गई और कबूतरों को दाना चुगने के लिए दिया। साथ ही कहा कि यदि राजा कौशल की मानें तो एक भी दाना मत

चुगना लेकिन सारे कबूतरों ने दाना चुग लिया। रानी ने फिर दाना डाला और कहा कि यदि राजा विक्रम की मानो तो एक भी दाना मत चुगना। किसी कबूतर ने एक भी दाना नही खाया। सिर्फ कबूतरी बहरी होने के कारण दाना चुगती रही और उसका सिर अपने आप कट गया।

राजा वहां से चला गया। दरबार में वह व्यक्ति दुबारा आया और कि आपने रात में ऋण देने के विषय में कुछ विचार किया। राजा ने कहा कि मैं एक कौड़ी तक उधार नही दूंगा। तब वह व्यक्ति राजा कौशल को नदी के तट पर ले गया और मिट्टी से राजा का महल बनाकर उससे पूछा- आपका महल ऐसा ही दिखता है न ? राजा बोला- ' हां, तुम तो बहुत अच्छे कलाकार हो। ' तभी उस व्यक्ति ने दक्षिणी द्वार पर मुक्का मारकर उसे तोड़ दिया।

उधरा राजा के महल का दक्षिणी द्वार सचमुच टूट गया। वह व्यक्ति बोला- ' अगर उधार नही दिया तो इसी तरह तुम्हारा पूरा महल ध्वस्त कर दूंगा। ' राजा डर गया और ऋण देते हुए बोला- ' यह बात किसी और को मत बताना।'

वह व्यक्ति जब राजा विक्रम के पास ऋण लेकर आया तो पूरी बात राजा को बताई। राजा विक्रम ने पूरे सोने के सिक्के रानी को देते हुए कहा कि तुम अपने लिए अच्छे वस्त्र और आभूषण ले सकती हो। रानी ने राजा और उस व्यक्ति की बातें पहले ही सुन ली थी तो वह बोलीं- 'मुझे कुछ नही चाहिए। मेरा असली आभूषण तो आपके सिद्धांत हैं जो इतने प्रभावशाली हैं।'

सतनपुरा शाखा, यूको बैंक में अपेक्षित शारीरिक दूरी का पालने करते ग्राहकगण

होमगार्ड शाखा में सफाईव्यवस्था को सुनिश्चित किया गया

रायबरेली शाखा के बाहर एकत्रित ग्राहणगण, उचित दूरी पर

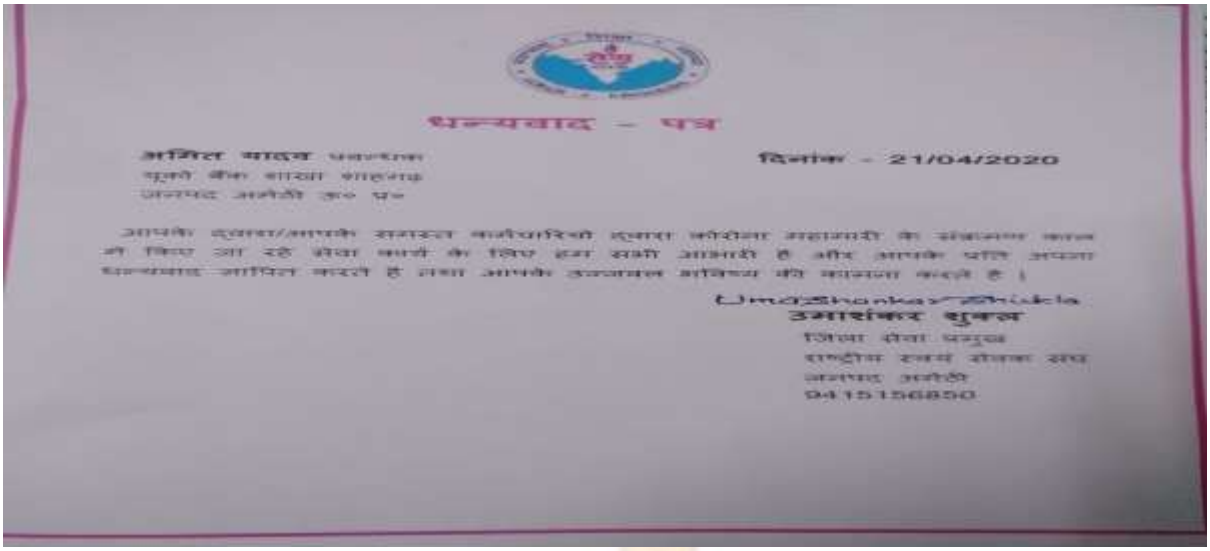

धन्यवाद - पत्र

दिनांक - 21/04/2020

उमाशंकर शुक्ल
जिला सेवा प्रमुख
राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ
जनपद अमेठी
9415156850

शाहगढ़ शाखा प्रबंधक का उत्कृष्ट सेवा प्रदान करने हेतु सम्मानित।

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल |

श्रमिक

श्रमसाध्य अपने ये दिवस कुछ यूँ बिताता है श्रमिक ।
इस धूप मे थक हार कर घर लौट आता है श्रमिक ।।

दो जून की रोटी मिले सपना यही उसका सुनो ।
इन होटलों को देख मन मे मुस्कुराता है श्रमिक ।।

रिक्शे के पैडल मारकर पाँवों पड़े छाले मगर ।
बच्चों से अक्सर बात ये हँसकर छुपाता है श्रमिक ।।

इस भूख से उसकी लड़ाई है पुरानी सी बहुत ।
वो पेट पर ही बाँध कपड़ा जीत जाता है श्रमिक ।।

मासूम भूखे सो न जायें है यही चिंता उसे ।
सौ ग्राम ही हो पर वो सब्जी रोज लाता है श्रमिक ।।

मजदूर अपनी हसरतों से दूर इतना वो हुआ ।
खुशियाँ अगर मिल जाये तो फिर मुँह चुराता है श्रमिक ।।

बेकार बातें ये सियासत क्या भला कोई करे ।
उम्मीद के इस दौर मे ये बुदबुदाता है श्रमिक ।।

राम खेलावन

सहा. प्रबंधक

अंचल कार्यालय-लखनऊ

अंचल एक नजर में

क्रम सं	मापदंड	31.03.2020अंचल की स्थिति (करोड़ मे)
1.	कुल जमा	3425
2.	बचत खाता जमा	1586
3.	चालू खाता जमा	165
4.	सावधिक जमा	1660
5.	कुल अग्रिम	835
6.	कृषि क्षेत्र	199
7.	प्राथमिक क्षेत्र	534
8.	एम.एस.एम.ई	207
9.	रिटेल	284
10.	एन.पी.ए	50.28
11.	कुल कारोबार	4260

राजभाषा कार्यान्यन समिति लखनऊ द्वारा आयोजित तिमाही बैठक का आयोजन एवं विश्व हिंदी दिवस के संदर्भ में विचार विमर्श -

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल |

बैंकों में ग्राहक सेवा कैसे समुन्नत की जाए ?

श्री पी.सी.यादव वरिष्ठ प्रबंधक

हम सब जानते हैं कि उत्कृष्ट ग्राहक सेवा ही हमारे बैंक की लाभप्रदता बढाने में सहायक सिद्ध हो सकती है । बेहतर ग्राहक सेवा प्रदान करने के लिए यह अति आवश्यक है कि ग्राहक जो कि बैंक के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है , उसकी आवश्यकतानुसार , जहां तक संभव हो सके , ध्यान रखा जाए क्योंकि ग्राहक पर ही हमारी बैंकिंग व्यवस्था निर्भर करती है । बेहतर सेवा प्रदान करने के लिए हम ग्राहक को निम्न श्रेणियों में विभाजित कर सकते हैं तथा उनको उनकी आवश्यकतानुसार सेवा प्रदान करने में हमें सहायता मिलेगी ।

1- **अति विशिष्ट ग्राहक -**

ऐसे ग्राहकोंपर तुरंत विशेष ध्यान देने की आवश्यता होती है । गंभीरता को देखते हुए उन्हें त्वरित सेवाएं प्रदान करने की चेष्टा की जानी चाहिए क्योंकि उनके पास समय की कमी होती है तथा बैंक से अपेक्षाएं ज्यादा होती हैं ।

2- **विशिष्ट ग्राहक -**

ऐसे ग्राहक जो हमारी बैंकिंग व्यवसाय में समय समय पर हर संभव सहयोग प्रदान करने में अग्रणी रहते हैं तथा हमारे व्यवसाय को बढ़ाने में हमारी मदद करते हैं । आकस्मिक बैंकिंग आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सदैव तत्पर रहते हैं , ऐसे ग्राहकों को हमें वरीयता के आधार पर ग्राहक सेवा प्रदान करनी चाहिए ।

3- **सामान्य ग्राहक -**

ऐसा नही है कि हमें अतिविशिष्ट एवं विशिष्ट ग्राहकों का ही ध्यान रखना है बल्कि सामान्य ग्राहक जो कि हमारी बैंकिंग सेवा में निरंतर तथा अवाध रूप से जुड़े रहते हैं , इन्हीं ग्राहकों की मदद से हम अपना कासा एवं , रिटेल , प्राथमिकता क्षेत्र एमएसएमई आदि को हम बढ़ाकर बैंक को समुन्न्त कर सकते हैं ।

4- **अन्य ग्राहक -** उपरोक्त ग्राहकों के अलावा बाकी ग्राहकों को हम अन्य ग्राहकों की श्रेणी में रख सकते हैं जो हमारे व्यवसाय को छोटी छोटी पूंजी के द्वारा बैंकिंग व्यवसाय को बढ़ाने में अहम भूमिका निभाते हैं ।

हमें सभी ग्राहकों का सम्मान एवं ध्यान रखते हुए तथा बैंकिंग व्यवसाय को लाभकारी बनाने हेतु हर संभव कदम उठाने चाहिए क्योंकि ग्राहक ही हमारे व्यवसाय को समुन्न्त बनाने में अहम भूमिका अदा करते हैं । यदि ग्राहक ही नही होंगे तो संस्था का कोई औचित्य ही नही रहेगा । इसलिए हमें ग्राहकों के प्रति सजग एवं सतर्क व सहयोगी भूमिका में रहना चाहिए ।

आज के परिप्रेक्ष्य में बैंकिंग कार्यप्रणाली सिंगल विंडो पद्धति पर कार्यरत है अतएव कोई भी ग्राहक बैंक में आता है तो वह फ्रंटलाइन स्टाफ से मुखातिब होता है अत: फ्रंटलाइन स्टाफ चाहे वह कर्मचारी हो या अधिकारी हो , उसे ग्राहक के साथ प्रसन्न मुद्रा में सहनशीलता के साथ मृदु भाषा का इस्तेमाल करते हुए ग्राहक से ऐसा व्यवहार करना चाहिए जिससे उसे यह अहसास हो कि वह सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में अपना वांछित कार्य कराने में सहजता महसूस करे । यदि ग्राहक बैंक सेवा से संतुष्ट होगा तो वह अन्य दस ग्राहकों से बैंक की प्रशंसा करेगा अन्यथा दुखी होकर बैंक के प्रति असंतुष्टि के साथ यहां वहां शिकायत करेगा जिससे बैंक की छवि धूमिल हो सकती है। अत: समस्त स्टाफ ग्राहक के साथ ऐसा व्यवहार करना चाहिए जिससे वह बैंकिंग सेवा से संतुष्ट हो सके । यदि ग्राहक संतुष्ट होगा तो बैंक की लाभप्रदता में स्वत: ही निरंतर वृद्धि होती रहेगी।

ऐसा कहा गया है कि " नर सेवा ही नारायण सेवा है अर्थात बैंक में उत्कृष्ट ग्राहक सेवा ही सर्वोत्तम सेवा है । "

वास्तम में हमें हर आगंतुक ग्राहक के प्रति आदर भाव रखते हुए हर तरह की मदद के प्रति संकल्पित होना चाहिए । बैंक का परिवेश साफ सुथरा हो एवं ग्राहकों के बैठने एवं उन्हें साफ पानी पिलाने की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए।

हर व्यक्ति को ऐसा कार्य करना चाहिए जो किसी को बुरा न लगे। किसी ने सच ही कहा है -

" काम कर ऐसा नेक बंदे कोई बुरा न कहे ।

बुरा कहे तो कहे , कोई भला न कहे। "

अर्थात मनुष्य को ऐसा कार्य करना चाहिए जिससे उसे कोई भला बुरा न कहे , यदि कोई बुरा आदमी कहता है तो कोई चिंता की बात नही है लेकिन यदि कोई भला आदमी कहता है तो सोचने का विषय है ।

महात्मा गांधी द्वारा कही ' ग्राहक देवो भव : ' इन पंक्तियों का मर्म आज भी उतना ही प्रासंगिक व सार्थक है कि हमारा ग्राहक ईश्वर के समान महत्वपूर्ण है जिसके बिना हम अपनी संस्था के बने रहने की परिकल्पना तक नही कर सकते , खास तौर पर बैंकिंग क्षेत्र में तो ग्राहक की सर्वोच्चता सर्वमान्य है । आज के इस गलाघोंटू प्रतियोगी माहौल में जहां हर बैंक के स्टाफ सदस्य , चाहे वे अधिकारी संवर्ग के हों या कर्मचारी संवर्ग के , सभी अपनी मातृसंस्था की सर्वतोन्मुखी उन्नति व प्रगति के लिए जी जान से जुटे है ताकि संस्था की लाभप्रदता बढे एवं इस तरह हमारे देश के विकास की कड़ी मजबूत हो ।

उत्कृष्ट ग्राहक सेवा ही , किसी भी सेवा क्षेत्र में सफलता की एकमात्र कुंजी है , एक ऐसा सूत्र जिसके जरिए हम बैंकिंग क्षेत्र में आम जन की समस्याएं दूर करते हुए बैंक को एक श्रेष्ठ बैंक की कोटि में ला सकते हैं । हम इस सचाई को बखूबी जानते हैं कि अगर बैंक को सफलता की ऊंचाइयों पर ले जाना चाहते हैं तो सघन जनसंपर्क के साथ उत्कृष्ट ग्राहक सेवा ही एकमात्र तरीका है जहां कर्मचारी व अधिकारी को बहुत ही संयम , धैर्य और सहनशीलता से प्रस्तुत होना पड़ता है । व्यक्तिगत अहं या इस तरह के किसी तरह की कुंठित मानसिकता पालकर हम बैंकिंग क्षेत्र में उत्तम ग्राहक सेवा प्रदान नही कर पाएंगे ।

सबसे पहले बैंक के समस्त स्टाफ सदस्यों के मन में यह भाव अंकित होना चाहिए कि ग्राहक सेवा के माध्यम से उन्हें समाज सेवा में सहभागिता का सुअवसर मिला है जिसे हम सर्वोच्च तरीके से प्रदान कर स्वयं व अपने बैंक को सफलता के नित्य नए सोपान प्रदान कर सकते हैं ।

निम्न बिंदुओं के माध्यम से हम सर्वोच्च ग्राहक सेवा को सुनिश्चित कर सकते हैं एवं हम अपनी ग्राहक सेवा को उत्कृष्ट कोटि का बना सकते हैं :

1- ग्राहक को व्यक्तिगत सम्मान व पहचान देते हुए ।

2- ग्राहकों के मनोविज्ञान को भांपते हुए यथोचित आचरण करना ।

3- ग्राहकों से कुतर्क या फिजूल की बहस से बचते हुए ।

4- कोई भी व्यक्तिगत या सामाजिक या राजनीतिक टिप्पणी को सार्वजनिक मंच पर लाने से भरसक बचना ।

5- ग्राहकों का कार्य अविलंब व बिना किसी त्रुटि सम्पन्न करके ।

6- ग्राहकों की गोपनीयता को संभालकर रखते हुए ।

7- उनके वित्तीय सलाहकार बनते हुए ।

8- अपने अहं व व्यक्तिगत राग द्वेष को घर पर ही छोड़कर आना है ।

9- मृदुभाषी व विनम्र बर्ताव से क्रोधी ग्राहकों को भी अपना मित्र बनाते हुए ।

10- उत्कृष्ट ग्राहक सेवा प्रदान कर इम अपना संगठन को कई तरीके से लाभान्वित कर सकते हैं जिनमें से कुछ और सुझाव :

- अपने बफादार ग्राहकों के जरिए हम नए ग्राहकों को जोड़ सकते हैं ।
- बैंक के बकायादारों से वसूली में भी अपने विशिष्ट आचरण व नेक व्यवहार से ग्राहकों से सहायता ले सकते हैं ।
- उसके प्रोफेसन व कार्य को समुचित प्राथमिकता देते हुए सही ढंग से समय पर काम करना ।
- अति महत्वपूर्ण ग्राहक को विशेष सम्मान व प्राथमिकता देकर ।
- कुछ मूल भूत आधार संरचनात्मक औपचारिकताओं का निर्वहन जैसे पानी , कुर्सी , पंखा , एसी , कूलर आदि को सुनिश्चित करना ।
- समयावधि में उपहार आदि देकर अपनी संस्था से जोड़ना जैसे , दीपावली व नया साल पर कैलेंडर , डायरी आदि देकर ।
- अपने अच्छे ग्राहकों को हर तरह से संतुष्ट करने के लिए उन्हें अन्य बैंकिंग उत्पादों आदि का लाभ पहुंचाया जा सकता है ।
- किसी शाखा के कर्मचारियों व अधिकारियों के उत्कृष्ट ग्राहक सेवा से प्रभावित करके हम उस शाखा की ख्याति में बढ़ोत्तरी कर सकते हैं एवं इस तरह दिन दूनी रात चौगुनी प्रसिद्धि से उस शाखा का व्यवसाय अपने आप बढ़ता जाता है ।

- सबसे जरूरी परिणाम है - आत्मसंतुष्टि - जिससे हमें अपने कामों से आत्मिक आनंद प्राप्त होता है ।
- उत्कृष्ट ग्राहक सेवा का अभ्यास करके हम व्यक्तिगत रूप से अधिक धैर्यवान , सहनशील व सेवा भाव से भर जाते है और धीरे धीरे हमारा समूचा व्यक्तित्व ही बदलता जाता है ।

'' यदि आप हमसे असंतुष्ट हैं

तो हमसे सर्वप्रथम अपनी शिकायत करें ।

यदि हमारी सेवा से आप प्रसन्न हैं

तो दूसरों को अधिकाधिक बताएं । ''

इसी तरह की सुंदर व सूक्तियें को अपनी शाखा में लगाकर हम ग्राहक सेवा की उत्कृष्टता को सुनिश्चित कर सकते है ।

जी.डी.बिड़ला व्याख्यानमाला का आयोजन -

अंचल कार्यालय, लखनऊ में शारीरिक दूरी का पालन करते हुए बैठक का आयोजन किया गया